This is Hindi translation of the original English public Declaration dated 17.12.2020

घोषणा / सार्वजनिक ज्ञापन

<u>जो कोई भी इससे संबंधित है उनके लिए</u>

मैं, तपागच्छ के मोहजितविजयजी समुदाय का गच्छाधिपति जैनाचार्य युगभूषणसूरि (पंडित महाराज), तीर्थंकर श्री महावीरस्वामी का वारिस और गणधर श्री सुधर्मास्वामी की वंशपरंपरा में होने के नाते और उनके 79वें उत्तराधिकारी के रूप में मुझे सौंपे गए अधिकारों के आधार पर श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन संघ के हित में आज यह घोषणा करता हूँ।

आणंदजी कल्याणजी ट्रस्ट (AKT) खुद को अखिल भारतीय जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक श्रीसंघ का प्रतिनिधि होने का दावा करता है। लेकिन AKT का मौजूदा ढ़ांचा ऐसा है कि यह भारत के श्वेतांबर मूर्तिपजक जैन संघ के केवल श्रावक समुदाय का ही प्रतिनिधित्व करता है, न कि साधु-साध्वी का। इसके बावजूद पिछली दो शताब्दियों से AKT ने कथित रूप से इस तरह कार्य किया है जैसे कि वह कार्य भारत के श्वेतांबर मूर्तिपूजक चतुर्विध संघ की ओर से किया गया हो।

हालांकि, यह देखा गया है कि AKT के नेतृत्व में हमारे श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन संघ ने भारत भर के महत्त्वपूर्ण तीर्थों के कई कानूनी एवं धार्मिक अधिकारों को खो दिया है। मुझे सौंपे गए अधिकारों के नाते एवं दी गई ज़िम्मेदारियों को ध्यान में रखते हुए पिछले कई वर्षों से तीर्थरक्षा एवं शासनरक्षा के मामलों में, मैं धीरजपूर्वक AKT का ध्यान आकर्षित करता रहा हूँ और शास्त्रीय एवं कानूनी मार्गदर्शन देते हुए योग्य व्यूहरचना बनाने के लिए उसे प्रेरित भी करता रहा हूँ। फिर भी, उसके गैर-ज़िम्मेदाराना और निष्क्रिय व्यवहार के कारण, जैन तीर्थों के मामलों में श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैनों के अपने अधिकारों को खोने का सिलसिला जारी रहा है। जिसके कारण भी उसकी प्रतिनिधित्व क्षमता में कोई प्रभाव नहीं रहा है।

इसलिए,

मैं, मेरे और मेरे आज्ञाधीन साधुओं (साधु-साध्वीओं) की ओर से यह घोषित करता हूँ कि श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन संघ से संबंधित कोई भी मामलों में आणंदजी कल्याणजी ट्रस्ट द्वारा हम साधु-साध्वियों का प्रतिनिधित्व कभी नहीं हुआ है।

इसके अलावा, मैं, मेरे और मेरे आज्ञाधीन साधु-साध्वीओं और अनुयायिओं (श्रावक एवं श्राविकाओं) की ओर से यह घोषित करता हूँ कि किसी भी प्राधिकरण या मंच या ऐसे किसी संगठन के समक्ष हमारे चतुर्विध संघ के धार्मिक और/अथवा कानूनी अधिकारों से जुडे किसी भी प्रकार के मामले में आणंदजी कल्याणजी ट्रस्ट प्रतिनिधित्व नहीं कर पाएगा। अतः मेरे अनुयायी श्रावक संघ (श्रावक एवं श्राविकाओं) द्वारा यदि पूर्व में आणंदजी कल्याणजी ट्रस्ट को कोई अधिकार हस्तांतरित किए गए हो या सौंपे गए हो, तो आज से वह जारी नहीं रहेगा।

श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन समुदाय के धार्मिक एवं कानूनी अधिकारों के मामले में AKT को जैनशासन के लिए उचित सुधारात्मक कदम उठाने के कई अवसर देने के बाद यह घोषणा की जा रही है।

यह घोषणा और हमारी कार्यवाही केवल जिनाज्ञा से दिशानिर्देशित है और रहेगी, जिसका आधार हमारे प्राचीन शास्त्र होंगे। और अब धार्मिक एवं कानूनी अधिकार और स्वाधीनता की रक्षा के लिए जिनाज्ञानुसारी उचित कदम उठाने में हम स्वतंत्र होंगे।

Sd/-

वि.सं. २०७७, मार्गशीर्ष सुद - ३ **(ग.आ. युगभूषणसूरि)**
दि. १७ दिसंबर २०२०
मुम्बई.

|| NAMO TITTHASSA ||

GACCHADHIPATI
JAINACHARYA SHRIMADVIJAY
YUGBHUSHANSURI
(PANDIT MAHARAJ SAHEB)

DECLARATION

TO WHOMSOEVER IT MAY CONCERN

I, Gacchadhipati of Mohjitvijayji Samuday of *Tapa-Gaccha*, Jainacharya Yugbhushansuri (Pandit Maharaj), as the heir of Tirthankar Shri Mahavirswami and being in the lineage of Gandhar Shri Sudharmaswami and by virtue of the powers delegated to me as their 79th successor, am making this declaration today in the interest of Shwetamber Murtipujak Jain Sangh.

Anandji Kalyanji Trust (AKT) claims itself to be the representative of All India Jain Shwetambar Murtikpujak Shree Sangh. But, the existing structure of AKT is such that it represents only Shravak Samuday of Shwetamber Murtipujak Jain Sangh of India and not that of Sadhus-Sadhavis. Despite of that, since last two centuries, it has purportedly acted as if acting on behalf of Shwetamber Murtipujak Chaturvidh Sangh of India.

However, under the leadership of AKT, it is observed that our Shwetamber Murtipujak Jain Sangh has lost several legal rights and religious rights in respect of significant Tirthas across India. For last several years, by virtue of such powers delegated to me and responsibility entrusted upon me, I have been patiently drawing their attention; persuading them for apt strategies and providing scriptural along with legal guidance towards the cause of Tirth Raksha and Shashan Raksha. Yet, due to their irresponsible and inactive behavior, the trend of Shwetamber Murtipujak Jains losing their rights in Jain Tirthas continued. This has also made their representative capacity ineffective.

Education Book Centre, 133, Gala Complex, Din Dayal Upadhyay Road, Mulund (W), Mumbai - 400 080
Whatsapp No.: 99300 11400 | Email: info@jyot.in

Scanned with CamScanner

Therefore,

I, on behalf of monks (Sadhus and Sadhavis) under my aegis, along with myself, declare that we monks were never represented by Anandji Kalyanji Trust (AKT) in any matter concerning Shwetamber Murtipujak Jain Sangh.

Further, I on behalf of Sadhus, Sadhavis and followers (Shravaks and Shravikas) under my aegis, along with myself, declare that we - our Chaturvidh Sangh, will not be represented by Anandji Kalyanji Trust (AKT) in respect of any matter or issue concerning religious and/or legal rights before any authority or fora or any such body. Hence, my follower Shravak Samuday (Shravaks and Shravikas) shall no longer continue to devolve their powers, if any devolved earlier, to Anandji Kalyanji Trust (AKT).

This declaration is given after giving numerous opportunities to AKT to take appropriate corrective steps for Jain Shashan in respect of religious and legal rights of Shwetamber Murtipujak Jain Community.

This declaration and our actions continue to be guided exclusively by Jin Aagna which is based upon our ancient scriptures, and we will be free to choose our course of action in accordance with the scriptures to secure religious and legal rights and liberties.

Acharya yugbhushansuri

(Ga. Jainacharya Yugbhushansuri)

Date: 17 December 2020

Place: Mumbai

Education Book Centre, 133, Gala Complex, Din Dayal Upadhyay Road, Mulund (W), Mumbai - 400 080
Whatsapp No.: 99300 11400 | Email: info@jyot.in

Scanned with CamScanner